धम्मवाणी-संग्रह

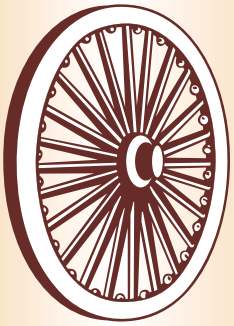

विपश्यना विशोधन विन्यास

धम्मवाणी-संग्रह

('विपश्यना पत्रिका' से उद्धृत)

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

विषय-सूची

(१) शील **१**

शील की महिमा १

शील की सुरक्षा २

शील का अतिक्रमण २

(२) चित्त **३**

चित्त की सुरक्षा ३

मन मैला और तन को धोये ४

चित्त सधे सब सधे ५

मन जीते जग जीत ५

मन का मैल उतार ६

(३) सुख - दुःख **७**

सुख या दुःख? ७

सरलता में ही सुख है ७

संतोष ही सच्चा सुख ७

भोगे सुख न होय ८

(४) शत्रु - मित्र - सेवाभाव **९**

राग : द्वेष : मोह - असली शत्रु ९

स्वार्थी मित्र ९

सेवा का फल ९

वैर बढ़ाये वैर, अवैर बढ़ाये प्रीत १०

जागे मैत्रीभाव १०

(५) सत्य-दर्शन **११**

संदृष्टि से दुःख-निरोध ११

सबको जाने निज समान १२

सम्यक दर्शन १२

सम्यक संबुद्ध १३

निर्विवाद सत्य १३

(६) तृष्णा **१४**

तृष्णाओं से विरक्ति, बंधनों से मुक्ति १४

तृष्णा का विषैला डंक १५

तृष्णा - दुःख का मूल १६

तृष्णाविहीन का जीवन १६

(७) अहंकार कायासक्ति **१७**
'मेरा', 'मेरा' क्या करे १७
रूप का स्वरूप जानो १७
गंदगी का ढेर १७
हड्डियों का नगर १८
रोगों की वृद्धि १८
(८) पराक्रम - प्रमाद **१९**
श्वास वृथा मत जाय १९
पराक्रम का महत्त्व १९
अपनी मुक्ति अपने हाथ १९
प्रमादी की विपन्नता २०
अप्रमादी की संपन्नता २०
(९) उत्तम पुरुष **२१**
उत्तम पुरुष के गुण २१
आदर्श साधक २१
सद्गृहस्थ के गुण २२
श्रेष्ठ पुरुष को नमन २३
पापकारी - पुण्यकारी २४
स्रोतापन्न की विशेषता २४
सच्चा विजयी २४
मूढ़ व्यक्ति की विवशता २५
प्राणी की वास्तविकता २५
(१०) लक्षण **२६**
संयत पुरुष कौन? २६
ब्राह्मण कौन? २६
पंडित कौन? २७
मुनि कौन? २७
भिक्षु कौन? २८
(११) मंगल भाव **२९**
मंगल कामना २९
सर्व-मंगल में स्व-मंगल २९
कर भला तो हो भला ३०
हिंसक की विमुक्ति ३०
उत्तम मंगल ३०

(१२) धर्मपथ **३२**
आनंदपथ ३२
श्रेष्ठ मार्ग ३२
प्रकाश की खोज ३२
(१३) जन्म – मृत्यु **३३**
मार का वार खाली जाय ३३
मृत्यु का वर्चस्व ३३
न मरने का भय, न जीने की चाह ३४
(१४) अनित्यता **३५**
अनित्यता का धर्म ३५
अनात्मबोध ३६
संवेदनाओं का प्रपंच ३६
(१५) विकार **३९**
क्रोध व लोभ चढ़ें जब सिर पर ३९
आसक्त बने विवादी, अनासक्त हो निर्विवादी ३९
गुण - अवगुण की परख ४०
कर्म ४०
कर्म ही प्रधान ४०
जैसी करनी वैसी भरनी ४०
अब देरी का क्या काम? ४२
किये ही होय ४२
(१६) वाणी **४३**
उपमा से धर्म-देशना ४३
बुद्ध की प्रबुद्ध वाणी ४३
उदान वाक्य ४४
उत्तम वाणी ४५
मौन की महत्ता ४५
(१७) बोधि **४६**
सत्य बोध ४६
(१८) बुद्ध वंदना **४७**
बुद्ध की सही वंदना ४७
(१९) बुद्ध शिक्षा **४८**
बुद्ध का शासन ४८
बुद्धों की शिक्षा ४९

(२०) निर्वाण **५०**
निर्वाण का साक्षात्कार कैसे? ५०
निर्वाण - परम सुख ५०
मोक्ष के अधिकारी ५०
सजगता से विमुक्ति ५१
(२१) भव-चक्र **५३**
भव-बंधन टूट गये ५३
संसार में आवागमन क्यों? ५५
व्यर्थ ही रोय ५६
भवचक्र से मुक्ति ५६
सुलगता संसार ५६
(२२) कल्याणमित्र – सत्संग **५७**
कल्याणमित्र कौन? ५७
कल्याणमित्र का संयोग ५७
सत्संग की कामना ५७
सत्संगति ५८
(२३) धर्म **५९**
धर्म करे कल्याण ५९
धर्मचारी सुख का अधिकारी ६०
धर्मशरण ही उत्तम शरण ६१
धर्मरत्न अनमोल ६३
विपश्यना – सनातन धर्म ६३
यथाभूत ज्ञानदर्शन ६४
धर्मचारी ही सर्वप्रिय ६५
धर्म की निरपेक्षता ६५
(२४) दान की महिमा **६६**
सर्वोत्तम दान ६६
(२५) बिखरे मोती **६७**
रमणीय भूमि ६७
प्रज्ञा का प्रकाश ६७
अप्रमाद का सुपरिणाम ६७
दूध का दूध पानी का पानी ६८
गाथानुक्रमणिका **६९**
विपश्यना साहित्य **७३**
विपश्यना साधना के केन्द्र **७६**

दो शब्द

साधकों के लिए 'विपश्यना' नाम के मासिक प्रेरणापत्र का प्रकाशन सन १९७१ से हो रहा है। तभी से इसके हर अंक में बुद्ध-वाणी का कोई-न-कोई संदर्भ भी भाषानुवाद सहित उद्धृत किया जा रहा है।

इन संदर्भों का चयन विपश्यनाचार्य श्री गोयन्काजी स्वयं करते हैं। ये सभी संदर्भ साधकों के लिए बड़े प्रेरणादायी होते हैं और इनमें से बहुतों की व्याख्या भी वे साधना-शिविरों के दौरान करते हैं। साधकों के लिए इन संदर्भों का स्थायी महत्त्व होने से अब इन्हें पुस्तकाकार में प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया है।

प्रकाशन से पूर्व इन संदर्भों का विषयवार वर्गीकरण कर इन्हें उपयुक्त शीर्षकों एवं उप-शीर्षकों के तले रखा गया है।

हमारी मंगल कामना है कि इस सत्प्रयास से सभी साधक खूब खूब लाभान्वित हों।

निदेशक,

विपश्यना विशोधन विन्यास

वा णी - सं ग्र ह

(१) शील

शील की महिमा

सीलं बलं अप्पटिमं, सीलं आयुधमुत्तमं।
सीलमाभरणं सेट्ठं, सीलं कवचमब्भुतं॥

(अनुपम-) अप्रतिम है शील का बल (-वैभव)। उत्तम है शील का आयुध (-अस्त्र)। श्रेष्ठ है शील का आभरण (-आभूषण)। अद्भुत है शील का कवच (-बख्तर)।

सीलगन्धसमो गन्धो, कुतो नाम भविस्सति।
यो समं अनुवाते च, पटिवाते च वायति॥

शील-गंध के समान अन्य गंध कहां होगी - जो जैसे हवा के रुख की ओर, वैसे ही उल्टी ओर भी बहती हो।

सोभन्तेव न राजानो, मुत्तामणि विभूसिता।
यथा सोभन्ति यतिनो, सीलभूसनभूसिता॥

मुक्ता-मणियों से सुसज्जित राजा भी ऐसे शोभायमान नहीं होते जैसे कि शील के आभूषण से सुसज्जित यति शोभायमान होते हैं।